

सम्पादकीय

आज जहां भारत में स्मार्टफोन के इस्तेमाल की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है। वैसे भारत जैसे देश जहां युवाओं की आबादी बहुत ज्यादा है, वहां डिजिटल क्रांति से पूरी तरह अलग भी नहीं रहा जा सकता। ऐसे में एक नियम से ही सबको नियंत्रित करना संभव नहीं होगा। इसके बावजूद हमें स्वीकारना होगा कि विदेशी प्लेटफश्मों से प्रसारित अपसंस्कृति भारतीय किशोरों को पथभ्रष्ट करने में ...

माता त्रिपुर सुंदरी का प्राकट्य दिवस आज

माता त्रिपुर सुंदरी, जिन्हें माता ललिता अंबा या राजराजेश्वरी के नाम से भी जाना जाता है, का प्राकट्य दिवस प्रतिवर्ष माघ मास की पूर्णिमा को मनाया जाता है। इस पुनीत तिथि को ललिता जयंती के रूप में भी जाना जाता है। वर्ष 2026 के अनुसार, यह महत्वपूर्ण तिथि, आज दिनांक 1 फरवरी 2026 , दिन रविवार, माघ पूर्णिमा को है। माता के प्राकट्य की संक्षिप्त कथा को सुनाता हूं। पौराणिक कथाओं के अनुसार, जब देवताओं को भंडासुर नामक दैत्य प्रताड़ित कर रहा था, तब देवताओं ने आदिशक्ति की आराधना की। उनकी प्रार्थना से प्रसन्न होकर माता एक महान अग्नि कुंड (चिदग्नि कुंड) से प्रकट हुईं। वे अत्यंत सुंदर, तेजस्वी और शस्त्रों से सुसज्जित थीं। उन्होंने ही भंडासुर का वध कर सृष्टि में पुनः धर्म और शांति की स्थापना की। त्रिपुर सुंदरी का स्वरूपस्तीनों लोकों में सबसे सुंदर। षोडशी यानी इन्हें 16 वर्ष की आयु वाली देवी माना जाता है, जो पूर्णता का प्रतीक है। श्री विद्या की देवी का संबंध श्री चक्र से है, जो ब्रह्मांड की ऊर्जा का केंद्र माना जाता है। इस दिन भक्त उपवास रखते हैं और माता की .पा पाने के लिए विशेष अनुष्ठान करते हैं। आज के दिन ललिता सहस्रनाम का पाठ करना अत्यंत शुभ माना जाता है। श्री यंत्र का पूजन और कुंकुम अर्चन किया जाता है। मान्यता है कि इनकी पूजा से सुख—समृद्धि, सुंदरता और मोक्ष की प्राप्ति होती है।



लेखक

विनय कांत मिश्र/

दैनिक बुद्ध का संदेश

विकास के मौजूदा ढर्रे के साथ, पर्याप्त रोजगार पैदा करने के वास्ते अगले कुछ सालों तक भारत की सकल घरेलू उत्पाद की वृद्धि दर 12 प्रतिशत सालाना होनी चाहिए। जीडीपी वृद्धि की प्रत्येक इकाई अन्य देशों की तुलना में अधिक प्रदूषण और पर्यावरणीय गिरावट का कारण भी बन रही है। इसलिए, भारत उस शहरी-औद्योगीकरण विकास मॉडल का पालन जारी रखना गवारा नहीं ...

जीडीपी वृद्धि की प्रत्येक इकाई अन्य देशों की तुलना में अधिक प्रदूषण और पर्यावरणीय गिरावट का कारण भी बन रही है। इसलिए, भारत उस शहरी—औद्योगीकरण विकास मॉडल का पालन जारी रखना गवारा नहीं कर सकता, जिसने वैश्विक पर्यावरण और असमानता संकट पैदा किए हैं। भारत के नीति—निर्माता दुविधा में हैं। उनका कहना है कि कृषि क्षेत्र में जरूरत से बहुत ज्यादा लोग काम कर रहे हैं। उनके अनुसार, भारत के कृषि क्षेत्र की उत्पादकता, जिसको इसमें कार्यरत लोगों की संख्या के हिसाब से मापा जाता है, वह बहुत कम है। उनका मानना है कि ज्यादा से ज्यादा लोगों को ग्रामीण इलाकों एवं खेतों से और लघु, ‘अनौपचारिक’ कारखानों और सेवा उद्यमों से भी निकालकर शहरों में लाया जाए ताकि उन्हें बड़े, ‘औपचारिक’ कारखानों एवं सेवा उद्यमों में काम पर लगाया जा सके। समस्या यह है कि बड़े औपचारिक उद्यम पर्याप्त सुशिक्षित नौकरियां और अच्छा वेतन नहीं दे रहे हैं। वे ज्यादा लोगों को काम पर रखने, उन्हें अधिक तनखाह और सामाजिक सुरक्षा देने को तैयार नहीं हैं। इसकी बजाय,

वे वेतन की लागत कम रखने के लिए अधिक ‘लचीले’ श्रम कानूनों की मांग कर रहे हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था की मुख्य समस्या यह है कि सभी क्षेत्रों मसलन, विनिर्माण, सेवाएं और कृषि में नियोजता अपना उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने के लिए इंसानों के बजाय ज्यादा मशीनरी और ज्यादा तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था को जिस मुख्य सुधार की जरूरत है, वह है व्यावसायिक उद्यम के ढर्रे और प्रचालन में सुधार। मजदूर, चाहे वे खेतों में हों या कारखानों में, वे जिस उद्यमों में काम करते हैं उनके मालिकों की सोच होती है, उनके काम से हुआ मुनाफा, उनका ही रहे और उनकी संपत्ति में इजाफा करे, न कि यह लाभ किसी वित्तीय निवेशक की संपत्ति बढ़ाने के काम आए। उत्पादन प्रक्रिया के लिए आवश्यक पूंजीगत संपत्ति जैसे कि विनिर्माण उद्यम में मशीनें और खेती के लिए जमीन, उद्यम में काम करने वाले मजदूरों की होनी चाहिए।



मजदूर अपने मालिक खुद हों और उन्हें स्टॉक मार्केट निवेशकों और सामंती जमींदारों की मलिकयत वाले कारखानों और खेतों में कर्मचारी बनने के लिए मजबूर नहीं किया जाना चाहिए। अपने काम से होने वाले मुनाफे का इस्तेमाल वह कैसे करेंगे, यह चुनने का अधिकार उन्हें होना चाहिए। अब चाहे तो अपने उद्यम में और अधिक निवेश करें या अपने परिवार के कल्याण और अपने बच्चों की

हासिल कर सकें, जिसे वे ईमानदारी के रास्ते से कमी प्राप्त नहीं कर सकते थे। हमारी भारतीय न्याय प्रणाली प्रतिद्वंद्वी पद्धति पर आधारित है, जिसका मूल सिद्धांत ही यह है कि जब कानूनी जगत का वह अंधेरा कोना है जहां वादी और प्रतिवादी विरोधी होने का मात्र ढोंग करते हैं जबकि हकीकत में वे एक ही ‘साजिशी पटकथा’ के किरदार होते हैं। जब न्याय की गुहार लगाने वाला और उसका विरोध करने वाला, दोनों ही परदे के पीछे एक हो जाएं, तो अदालत का कठघरा केवल एक रंगमंच बनकर रह जाता है। न्याय की बुनियादी अवधारणा को ठेस पहुंचती है। ऐसी कृत्रिम लड़ाइयां न केवल न्यायिक समय की बर्बादी हैं, बल्कि उन वास्तविक शोषितों का हक भी मारती हैं जो न्याय की कतार में अंतिम पायदान पर खड़े हैं। सरल शब्दों में कहें तो जब दो पक्ष आपस में हाथ मिलाकर अदालत के सामने ‘नूरा—कुश्ती’ (दिखावटी लड़ाई) करते हैं, तो उसे कानून में ‘कलूसिव सूट’ कहा जाता है। आम बोलचाल में इसे ‘साजिशी मुकदमा’ कहना ज्यादा सटीक होगा। यह एक ऐसा कृत्रिम विवाद है जहां दोनों पक्ष वास्तव में एक—दूसरे के विरोधी नहीं होते और उनके बीच कोई वास्तविक कानूनी संघर्ष नहीं होता। वे अदालत की चौखट पर सिर्फ इसलिए पेश होते हैं ताकि आपसी साजिश के जरिए एक ऐसी ‘डिक्री’ या सरकारी आदेश



दो विरोधी पक्ष पूरी शिद्दत से अपनी बात और दलीलें रखेंगे, तभी सत्य छनकर बाहर आएगा। लेकिन जब विरोध ही दिखावटी हो और दोनों पक्ष ‘मेज के नीचे’ हाथ मिला चुके हों, तो अदालत महज एक मूकदर्शक बनकर रह जाती है। निस्संदेह, यह उस पवित्र तंत्र की तौहीन भी है जिसे समाज में न्याय की रक्षा के लिए बनाया गया है। कानून की नजर में ‘मिलीभगत’ के लिए कोई सहानुभूति नहीं है। भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 2023 की धारा 40 स्पष्ट रूप से प्रावधान करती है कि यदि कोई फैसला, आदेश या डिक्री ‘धोखे’ या मिलीभगत से प्राप्त की गई है, तो उसे किसी भी समय चुनौती दी जा सकती है। यह धारा एक सुरक्षा

कवच है। इसके अलावा, नागरिक प्रक्रिया संहिता के तहत अदालतों को यह अंतर्निहित शक्ति प्राप्त है कि वे ऐसे मुकदमों को पहचानते ही खारिज कर दें। कानून का एक वैश्विक सिद्धांत है— धोखे से कमी भी कोई कानूनी अधिकार पैदा नहीं हो सकता। भारतीय न्यायपालिका ने हमेशा से इन साजिशी मुकदमों के विरुद्ध सख्त रुख अपनाया है। इस दिशा में ‘नगुबाई अम्मल बनाम बी. शमा राव’ (1956) का फैसला एक नजोर है, जिसमें सुप्रीम कोर्ट ने ‘साजिश’ और ‘धोखे’ के बीच के महीन अंतर को स्पष्ट किया। अदालत के अनुसार, ‘फ्रॉड’ में एक पक्ष दूसरे को छलता है, किंतु ‘कलूज’ में दोनों पक्ष मिलकर अदालत के साथ छल करते हैं। जब वादी और प्रतिवादी के बीच कोई वास्तविक विवाद न हो और उनका एकमात्र उद्देश्य न्याय की आड़ में किसी तीसरे पक्ष का हक मारना हो, तो वह पूरी तरह ‘साजिश’ है। इसी प्रकार, ‘रघुचंद गुप्ता बनाम रघुवंश कुमार’ (1964) में अदालत ने आगाह किया कि यदि डिक्री का उद्देश्य किसी किराएदार या हकदार का अधिकार मारना है, तो वह डिक्री बातिल (शून्य) होगी। इन फैसलों से स्पष्ट है कि न्याय के सिंहासन पर बैठी अदालतें केवल कागजी सत्यों को नहीं तौलतीं, बल्कि मुकदमों के पीछे छिपी बदनियती को पहचानने की कुव्वत भी रखती हैं। लोग ऐसा जोखिम अक्सर निजी स्वार्थ के लिए उठाते हैं, जैसे टैक्स चोरी, बैंक के कर्ज से बचना या अवैध कब्जा करना।

इसका सबसे बड़ा खमियाजा उस ‘तीसरे पक्ष’ को भुगतना पड़ता है जो अनजाने में अपना कानूनी हक खो देता हैय जैसे पिता—पुत्र की मिलीभगत बैंक के अधिकार को खत्म कर सकती है। यहां ‘मैत्रीपूर्ण मुकदमे’ (धारा 90, नागरिक प्रक्रिया संहिता) और ‘साजिशी मुकदमे’ के बीच की ‘कुत्सित मंशा’ को समझना लाजिमी है। जहां मैत्रीपूर्ण वाद कानूनी स्पष्टता के लिए होते हैं, वहीं साजिशी मुकदमे का उद्देश्य ‘अधिकार का अपहरण’ करना होता है। इसी महीन लकीर को पहचानना ही एक न्यायाधीश की असल परीक्षा है। एक वकील के लिए उसका पेशा केवल जीविका नहीं, बल्कि एक पवित्र जिम्मेदारी है। वकीलों को यह समझना होगा कि वे ‘ऑफिसर ऑफ द कोर्ट’ हैं, न कि किसी साजिश के पटकथा लेखक। यदि कोई अधिकारता जानते हुए भी ऐसे फर्जी मुकदमों का हिस्सा बनता है, तो बार काउंसिल को ऐसे सदस्यों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करनी चाहिए। इस खतरे को टालने के लिए सजग ‘न्यायिक सक्रियता’ अनिवार्य है। अदालतों को मुकदमों के पीछे छिपी मंशा को भांपना होगाय जहां प्रतिवादी बिना किसी प्रतिरोध के सब स्वीकार कर ले, वहां न्यायपीठ को तुरंत सतर्क हो जाना चाहिए। इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए भारी आर्थिक दंड की ऐसी नजोर पेश करनी होगी, जो भविष्य के लिए सबक बने। साथ ही, उन ‘तीसरे पक्षों’ के लिए कानूनी राह आसान करनी होगी, जो इन बंद कमरों की साजिशों के असली शिकार होते हैं।

श्रमिक—किसान कल्याण हो जीडीपी का पैमाना

शिक्षा पर लगाएं। जैसा कि माइक बर्ड ने अपनी किताब ‘द लैंड ट्रेप रू ए न्यू हिस्ट्री ऑफ द वर्ल्ड्स ओल्डस्ट एसेट’ नामक पुस्तक में बताया है कि भू—स्वामित्व में सुधार, जिसके तहत जमीनें जमींदारों से लेकर उनके खेतों में काम करने वाले मजदूरों को हस्तांतरित की गईं, उसकी बदौलत पिछले 50 सालों में जापान, दक्षिण कोरिया, ताइवान और चीन में छोटे किसानों की आय भारत की तुलना में कहीं ज्यादा तेजी से बढ़ी। बर्ड व्याख्या करते हैं कि भारत की तुलना में अन्य देशों में सुधार तेजी से क्यों हुए। सभी देशों में निहित स्वार्थ सुधारों के रास्ते में आड़े आते हैं। हालांकि, उन देशों के नेताओं ने किसान—मजदूरों के अधिकारों का समर्थन किया, न कि पूंजीपति—मालिकों का। सुधारों से छोटे किसानों की कमाई और संपत्ति बढ़ी, और उन्होंने अपने बच्चों की शिक्षा में ज्यादा निवेश किया। गौरतलब है कि लोगों को खेती से हटाए बिना भी,

कृषि—उत्पादन और कृषि उत्पादकता बढ़ी है। अर्थशास्त्रियों और व्यापार करने वालों को उद्यमों में पैमाने पर फिर से सोचना चाहिए। एक मानकीकृत वस्तु का बड़े पैमाने पर उत्पादन, चाहे यह फैक्टरी उत्पादन बढ़ाने में सहायक कोई प्रक्रिया हो या बड़े खेत में एक ही फसल उगाना, बड़ी मशीनों का उपयोग और दोहराव वाले कामों को करने के लिए कम कुशल श्रमिकों को रोजगार देकर अपनी आर्थिक

दक्षता बढ़ाता है। बड़े पैमाने के उद्यमी मशीनों और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में पूंजी लगाने की हेसियत रखते हैं। इस तरह, उन्हें कम श्रमिक और बुद्धि की जरूरत पड़ती है। ऐसा करके जहां उनकी दक्षता और उत्पादन मात्रा बढ़ सकती है, और उत्पादकता भी। ऐसे उद्यम कम श्रमिकों को नौकरी पर रखते हैं। वे अर्थव्यवस्था के ‘रोजगार रहित’ सकल घरेलू उत्पाद बढ़ोतरी से योगदान करते हैं। छोटे खेत जो जैविक तरीके से उन्नत किस्म की फसलें उगाते हैं, उन खेतों में उत्पादन की ‘संभावना’ ज्यादा होती है। कचरा खेत में अपने आप उपयोगी अवयव बन जाता है, खासकर उन खेतों में जहां पर जानवर भी रखे होते हैं। ज्यादा संभावना वाले खेत स्वाभाविक रूप से अधिक टिकाऊ होते हैं। ऐसे छोटे खेतों में, जिनका पैमाना कम किंतु संभावना अधिक हो, सामग्री और ऊर्जा अपने भीतर और ऐसे छोटे खेतों के आसपास ही घूमती रहती है। पर्यावरण वैज्ञानिक बेंकलाव स्मिल ने आधुनिक उद्योगों, खाद्य उत्पादन और वितरण प्रणालियों, और वैश्विक परिवहन प्रणालियों में हाइड्रोकार्बन ऊर्जा



माघ पूर्णिमा स्नान से मिलता है मोक्ष

माघ पूर्णिमा या माघी पूर्णिमा का हिंदू धर्म में बड़ा ही धार्मिक महत्त्व बताया गया है। वैसे तो हर पूर्णिमा का अपना अलग-अलग माहात्म्य होता है, लेकिन माघ पूर्णिमा की बात सबसे अलग है। इस दिन संगम (प्रयाग) की रेत पर स्नान-ध्यान करने से मनोकामनाएं पूर्ण तो होती ही हैं, साथ ही मोक्ष की प्राप्ति भी होती है। मघा नक्षत्र के नाम पर माघ पूर्णिमा की उत्पत्ति होती है। माघ माह में देवता पितरगण सदृश होते हैं। पितृगणों की श्रेष्ठता की अवधारणा और श्रेष्ठता सर्वविदित है। पितरों के लिए तर्पण भी हजारों साल से चला आ रहा है। इस दिन स्वर्ण, तिल, कंबल, पुस्तकें, पंचांग, कपास के वस्त्र और अन्नादि दान करने से सुकृत्य मिलता है३

स्थानीय कलाकृतियां
माघ माह के बारे में कहते हैं कि इन दिनों देवता पृथ्वी पर आते हैं। प्रयाग में स्नान-दान आदि करते हैं। सूर्य मकर राशि में आ जाता है। देवता मनुष्य रूप धारण करके भजन-सत्संग आदि करते हैं। माघ पूर्णिमा के दिन सभी देवी-देवता अंतिम बार स्नान करके अपने लोकों को प्रस्थान करते हैं। नतीजतन इसी दिन से संगम तट पर गंगा, यमुना एवं सरस्वती की जलराशियों का स्तर कम होने लगता है। मान्यता है कि इस दिन अनेकों तीर्थ, नदी-समुद्र आदि में प्रातरु स्नान, सूर्य अर्घ्य, जप-तप व दान आदि से सभी दैहिक, दैविक एवं भौतिक तापों से मुक्ति मिल जाती है। शास्त्र कहते हैं कि यदि माघ पूर्णिमा के



दिन पुष्य नक्षत्र हो तो इस दिन का पुण्य अक्षुण हो जाता है।

पौराणिक प्रसंग: शास्त्रों में एक प्रसंग है कि भरत ने कौशल्या से कहा कि 'यदि राम को वन भेजे जाने में उनकी किंचितमात्र भी सम्मति रही हो तो वैशाख, कार्तिक और माघ पूर्णिमा के स्नान सुख से वो वंचित

रहें। उन्हें निम्न गति प्राप्त हो।' यह सुनते ही कौशल्या ने भरत को गले से लगा लिया। इस तथ्य से ही इन अक्षुण पुण्यदायक पर्व का लाभ उठाने का महत्त्व पता चलता है।

कल्पवास की पूर्णता: माघ पूर्णिमा कल्पवास की पूर्णता का पर्व है। एक माह की तपस्या इस तिथि को

समाप्त हो जाती है। कल्पवासी अपने घरों को लौट जाते हैं। स्वाभाविक है कि संकल्प की संपूर्ति का संतोष एवं परिजनों से मिलने की उत्सुकता उनके हृदय के उत्साह का संचार है। इसीलिए यह स्नान पर्व आनंद और उत्साह का पर्व बन जाता है।

संक्षिप्त कथा: माघ माह की पूर्णिमा को 'बत्तीस पूर्णिमा' भी कहते हैं। पुत्र और सौभाग्य को प्राप्त करने के लिए मध्याह्न में शिवोपासना की जाती है। एक पौराणिक कथा के अनुसार कांतिका नगरी में ६ ानेश्वर नामक एक ब्राह्मण रहता था। वह निरुसंतान था। बहुत उपाय किया, लेकिन उसकी पत्नी रूपमती से कोई संतान नहीं हुई। ब्राह्मण दान आदि मांगने भी जाता था। एक व्यक्ति ने ब्राह्मण दंपति को दान देने से इसलिए मना कर दिया कि वह निरुसंतान दंपति को दान नहीं करता है। लेकिन उसने उस निरुसंतान दंपति को एक सलाह दी कि चंद्रिका देवी की वे आराधना करें। इसके पश्चात ब्राह्मण दंपति ने मां काली की घनघोर आराधना की। 16 दिन उपवास करने के पश्चात मां काली प्रकट हुई। मां बोलीं कि तुमको संतान की प्राप्ति अवश्य होगी। अपनी शक्ति के अनुसार आटे से बना दीप जलाओ और उसमें एक-एक दीप की वृद्धि करते रहना। यह कर्क पूर्णिमा के दिन तक 22 दीपों को जलाने की हो जानी चाहिए। देवी के कथनानुसार ब्राह्मण ने आम के वृक्ष से एक आम तोड़ कर पूजन हेतु अपनी पत्नी को दे दिया। पत्नी इसके बाद गर्भवती हो गई।

देवी के आशीर्वाद से देवदास नाम का पुत्र पैदा हुआ। देवदास पढ़ने के लिए काशी गया, उसका मामा भी साथ गया। रास्ते में घटना हुई। प्रपंचवश उसे विवाह करना पड़ा। देवदास ने जबकि साफ-साफ बता दिया था कि वह अत्यायु है, लेकिन विधि के चक्र के चलते उसे मजबूरन विवाह करना पड़ा। उधर, काशी में एक रात उसे दबोचने के लिए काल आया, लेकिन व्रत के प्रताप से देवदास जीवित हो गया।

माघ स्नान की महिमा: संगम में माघ पूर्णिमा का स्नान एक प्रमुख स्नान है। इस दिन सूर्योदय से पूर्व जल में भगवान का तेज रहता है, जो पाप का शमन करता है। निर्णयसिंधु में कहा गया है कि माघ मास के दौरान मनुष्य को कम से कम एक बार पवित्र नदी में स्नान करना चाहिए। भले पूरे माह स्नान के योग न बन सकें, लेकिन माघ पूर्णिमा के स्नान से स्वर्गलोक का उत्तराधिकारी बना जा सकता है। इस बात का उदाहरण इस श्लोक से मिलता है

'मासपर्यन्त स्नानासम्भवे तु त्रयहमेकाहं वा स्नायात्।'

अर्थात् 'जो लोग लंबे समय तक स्वर्गलोक का आनंद लेना चाहते हैं, उन्हें माघ मास में सूर्य के मकर राशि में स्थित होने पर अवश्य तीर्थ स्नान करना चाहिए।' हिंदू धर्म के अनुसार महाकुंभ में माघ पूर्णिमा का स्नान इसलिए भी महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि इस तिथि पर चंद्रमा अपने पूर्ण यौवन पर होता है।

माघ पूर्णिमा पर बरसेगी भगवान विष्णु-माता लक्ष्मी की कृपा, बस कर लें ये 5 अचूक उपाय

सनातन धर्म में पूर्णिमा तिथि का विशेष महत्व माना जाता है। माघ महीने में पड़ने वाली पूर्णिमा तिथि का पद्म पुराण में काफी महत्व बताए हैं। इस तिथि पर स्नान, दान, पितरों का



श्राद्ध आदि कार्य करने से पुण्य फल की प्राप्ति होती है। पुराणों ने बताया है कि माघ मास कार्तिक माह के समान ही फल देने वाली होती है। इस तिथि पर स्नान करने के साथ-साथ कुछ विशेष उपाय और दान करने से अत्यंत शुभ फल प्राप्त होते हैं। इस बार माघ पूर्णिमा 1 फरवरी को मनाई जाएगी। दरअसल, 1 फरवरी को पूर्णिमा तिथि सुबह 5 बजकर 52 मिनट से शुरु होकर 2 फरवरी को सुबह 3 बजे 38 मिनट पर समाप्त होगी। ऐसे में उदया तिथि के अनुसार, 1 फरवरी को पूर्णिमा मनाई जाएगी। यदि आप माघ पूर्णिमा पर 5 काम कर लें तो इससे भगवान विष्णु के साथ ही माता लक्ष्मी की कृपा प्राप्त होती है। आइए आपको बताते हैं माघ पूर्णिमा के उपाय।

पितरों के आशीर्वाद के लिए जरूर करें यह काम
माघ पूर्णिमा तिथि पर पितरों का श्राद्ध कार्य करना जरूरी होता है। ऐसा करने से पितर प्रसन्न होते हैं और परिवार पर इनकी कृपा बनी रहती है। यदि आप पितृदोष का सामना कर रहे हैं तो इस उपाय को जरूर करें। इससे जीवन में आने वाली समस्याओं और आर्थिक तंगी से मुक्ति मिल सकती है। इसके साथ ही जीवन में खुशहाली आती है।

इस उपाय से नहीं होगी अन्न-धन की कमी
माघ पूर्णिमा के दिन किसी जरूरतमंद या गरीब व्यक्ति को अनाज का दान करना चाहिए। इसके साथ ही इस तिथि पर जल और अन्न का दान करना भी शुभ माना जाता है। धार्मिक मान्यता है कि अनाज का दान करने से घर में कमी भी अन्न-धन की कमी नहीं होती है। क्या आपके घर की बरकत रुकी है और कार्यों में बाधाएं आ रही हैं, तो आप इस उपाय को जरूर करें।

विष्णुजी और मां लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करने का उपाय
माघ पूर्णिमा के दिन आप सुबह जल्दी उठकर स्नान करके भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए। इसके लिए लकड़ी की चौकी पर लाल या पीले रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर विष्णुजी और मां लक्ष्मी की प्रतिमा स्थापित करें। इसके बाद वस्त्र, ताजा पुष्प, पंचामृत अर्पित करें। फिर आप विधिपूर्वक पूजा आरती करें। इसके साथ ही इस दिन विष्णुजी के मंत्रों का जाप करना चाहिए। ऐसा करने से भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की कृपा प्राप्त हो सकती है।

इस उपाय से जीवन में खुलेंगे तरक्की के मार्ग
धार्मिक शास्त्रों में पूर्णिमा तिथि पर स्नान करने का विशेष महत्व बताया गया है। माना जाता है कि इस दिन पवित्र नदी में स्नान करके भगवान विष्णु का ध्यान करना चाहिए। यदि संभव न हो पाए तो घर पर ही स्नान के पानी में गंगाजल मिलाकर स्नान कर सकते हैं। इसके साथ ही, भगवान विष्णु का मन में ध्यान अवश्य करना चाहिए। ऐसा करने से जातक के जीवन में सफलता के मार्ग खुल जाते हैं।

धन-धान्य में वृद्धि के लिए करें यह काम
पूर्णिमा तिथि पर दान करना बेहद ही शुभ माना जाता है। जीवन में सुख-समृद्धि और ६ ान-धान्य में वृद्धि के लिए इस तिथि पर दान करना जरूरी होता है। माना जाता है कि पूर्णिमा तिथि पर किसी भी जरूरतमंद व्यक्ति को कंबल, तिल आदि का दान करने से अत्यंत शुभ फल का प्राप्ति होती है। ऐसा करने से करियर और नौकरी में आने वाली बाधाओं से राहत मिल सकती है। इसके साथ ही, आपके घर में बरकत बढ़ेगी।

नीलम गिरी को मिला द 50 का गोल्डन टिकट, लॉयन के महल में भोजपुरी क्वीन की एंट्री



भोजपुरी सिनेमा की मशहूर अभिनेत्री नीलम गिरी बिग बॉस 19 के बाद अब रियलिटी शो द 50 में जाने वाली हैं। इस बात की जानकारी उन्होंने खुद सोशल मीडिया के जरिए दी। अभिनेत्री ने इंस्टाग्राम पर एक वीडियो शेयर किया, जिसमें उन्होंने पुष्टि करते हुए कहा, ये आ गया मेरा द 50 का गोल्डन टिकट और मुझे बुलावा आ गया है लॉयन के महल में जाने के लिए। अब मैं जा रही हूँ शॉपिंग के लिए। आप लोग द 50 1 फरवरी से जियो हॉटस्टार और कलर्स पर देख सकते हैं। अभिनेत्री ने वीडियो के साथ लिखा, बिग बॉस 19 के बाद जियो हॉटस्टार और कलर्स के साथ फिर जुड़ना मेरे लिए बहुत खुशी की बात है, लेकिन इस बार एक बिल्कुल नए रियलिटी शो द 50 के साथ।

उन्होंने लिखा, बिग बॉस के घर में मेरा सफर बहुत शानदार रहा। दर्शकों ने मुझे खूब प्यार दिया, खासकर सीधा जाकर लेपट लें और चाय बनाना जैसे पलों के लिए। अब कुछ नया शुरू करने को लेकर मैं काफी उत्साहित हूँ। उम्मीद है यहां भी ऐसे कई यादगार पल बना पाऊंगी। मैं इस नए चैलेंज और मुकाबले के लिए पूरी तरह तैयार हूँ और द 50 में अपना पूरा दम लगाऊंगी।

उन्होंने आखिरी में लिखा, द 50 1 फरवरी से जियोहॉटस्टार पर, एक नई शुरुआत का समय है, द 50, मैं आ रही हूँ।

शो द 50 एक बड़ा रियलिटी गेम शो है, जिसमें 50 मशहूर हस्तियां एक महल में रहकर अलग-अलग चुनौतियों में हिस्सा लेंगी। इसमें स्ट्रैटेजी, टास्क, ड्रामा और माइंड गेम्स का पूरा पैकेज होगा।

शो के कुछ कंटेस्टेंट के नाम सामने आ चुके हैं, तो कुछ के नामों को लेकर अभी खुलासा नहीं हुआ है। अब देखना होगा कि इतने सेलेब्स के साथ यह शो दर्शकों के लिए कैसा रहेगा। शो में करण पटेल, फैसल शेख (मिस्टर फैसू), दिव्या अग्रवाल, अर्चना गौतम, प्रिंस नरूला, मोनालिसा और उनके पति विक्रान्त सिंह राजपूत और प्रतीक सहजपाल, ऋद्धि डोगरा और उर्वशी ढोलकिया समेत कई कंटेस्टेंट नजर आएंगे।

बॉर्डर 2 बॉक्स ऑफिस: भारत में 250 करोड़ से बस इतनी दूर है फिल्म, जानें 7वें दिन कितनी हुई कमाई



रुपये कमाए और तीसरे दिन यानी पहले रविवार फिल्म ने 57.20 करोड़ रुपये कमाकर शानदार वीकेंड पूरा किया था. बॉर्डर 2 ने भारत में पहले वीकेंड 129.80 करोड़ रुपये कमाए थे. फिल्म ने रिपब्लिक डे पर सबसे ज्यादा 63.59 करोड़ रुपये की कमाई कर डाली थी.

पांचवें दिन मंगलवार को फिल्म ने 23.31 करोड़ रुपये का कारोबार किया और छठे दिन बड़ी गिरावट के साथ 15.04 करोड़ रुपये कमाए. इसी के साथ बॉर्डर 2 का छह दिनों का नेट घरेलू ऑफिशियल कलेक्शन 231.83 करोड़ रुपये हो गया था. वहीं फिल्म ने सातवें दिन की 13.14 करोड़ रुपये की कमाई की और फिल्म भारत में 244.97 करोड़ रुपये कमा चुकी है.

हाल ही में, बॉर्डर 2 के हिट होने के दौरान फिल्म के तीसरे पार्ट बॉर्डर 3 का भी ऐलान हो चुका है. फिल्म के प्रोड्यूसर भूषण कुमार और निधि दत्ता ने बॉर्डर 3 की गुडन्यूज फैंस को दी और अब फिल्म की रिलीज डेट का इंतजार किया जा रहा है. वहीं, बॉर्डर 2 की बात करें तो इसका निर्देशन अनुराग सिंह ने किया है. फिल्म में सनी देओल, वरुण धवन, अहान शेट्टी, दिलजीत दोसांझ, मेघा राणा, सोनम बाजवा और अन्या सिंह लीड रोल में हैं. फिल्म में अक्षय खन्ना का भी कैमियो दिखाया जा रहा है.

द केरल स्टोरी 2 का मोशन पोस्टर जारी, रिलीज तारीख से उठा पर्दा

अभिनेत्री अदा शर्मा की फिल्म द केरल स्टोरी साल 2023 में रिलीज हुई थी जिसे लोगों द्वारा खूब सराहा गया था। निर्माता इस



कहानी को खत्म न करते हुए दूसरी किस्त के साथ ला रहे हैं जिसे द केरल स्टोरी 2रू गोज बिगैन्ड शीर्षक दिया गया है। फिल्म का मोशन पोस्टर जारी कर दिया गया है। साथ ही इसकी रिलीज तारीख से पर्दा उठाया गया है। दूसरी किस्त का निर्देशन कामाख्या नारायण सिंह ने किया है।

निर्माता विपुल अमृतलाल शाह ने द केरल स्टोरी 2 का मोशन पोस्टर जारी किया है जो भावनात्मक और गहन कहानी लाने का वादा करता है। टीजर में महिलाओं के पीड़ा से भरे चेहरों को दर्शाया गया है, जो डर, आंसू और बढ़ते गुस्से की तरफ ध्यान खींचते हैं। इस बार नए मुख्य कलाकारों को शामिल किया है जिनमें उल्का गुप्ता, अदिति भाटिया और ऐश्वर्या ओझा शामिल हैं। यह फिल्म 27 फरवरी, 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।